मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

एम० आर० भक्त
पी. एस. ई. (रीटायर्ड)

वर्ष 8	सोमवार 10 अक्टूबर 1981	संख्या 6

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज़, मानवता मन्दिर, होशियारपुर ।

दिनांक 5-7-81

मैं अब सत्संग कराने के योग्य नहीं रहा। क्यों ? क्योंकि यात्रा में चलता-चलता ऐसे स्थान पर पहुंच रहा हूं जहां न गुरु है, न शिष्य है, स्वामी है, न चेला है। जब वह अवस्था आ जाती है फिर सत्संग कौन कराये। जीवन किसी खोज में निकला था, भाग्य राधास्वामी मत में ले आया। इस मत में गुरु महिमा गाई हुई है। दाता ने नाम दान दिया, अत: अभ्यास करता हुआ चला आ रहा हुं। अब कहाँ पहुंचा ? जो मंजिल राधास्वामी

दयाल ने व कबीर साहिब ने कही है, वहां पहुंच रहा हूं। जेठ महीने में वह बताते हैं कि हमें कहां जाना है ?

जहां न सत्तनाम न नाम न अनामी।

कबीर साहिब ने कहा है :—

जहां पुरुष तहां कछु नाहिं, कहैं कबीर हम जाना।
हमरी सैना जो कोई समझे, पावे पद निर्वाना।

जब तबीयत वहां चली गई तो शेष सब समाप्त हो गया। अब तो गले पड़ा ढोल बजाता हुँ। ऊपर तो कहना; सुनना कुछ नहीं। न बोलना है, न चलना हैं, खामोशी है, चुप है, परम सुख है, शान्ति है,जहां कि हमने जाना है। आप लोग आ जाते हैं। आपको नीचे आकर क्या कहना चाहता हूं ? मालूम नहीं, सन्तों का कोई और अभिप्राय होगा। मुझे पता नहीं। मुझे जो कुछ मिला मैं वह कहता हूं। आपको जीवन का अनुभव बताता हूं कि जितना जीवन का झगड़ा है, हमारा सुख-दुःख, नेकी-बदी, पाप-पुण्य यह सारे का सारा सब हमारे मन का है।

यदि कोई व्यक्ति मन को काबू कर ले; मन पर सवारी कर ले तो उसके जीवन के सम्पूर्ण दुःख दूर हो सकते हैं। और जब तक व्यक्ति मन से परे नहीं जाता वह लाख प्रयत्न करे, लाख धर्म करे, लाख कर्म करे, दुःख सुख से वह बच नहीं सकता। गर्ज़े कि हमारे दुःखों व सुखों का, जन्म-मरण का सारा कारण जो है यह हमारा मन है। अतः मन को सम्भालना अत्यावश्यक वस्तु है।

मैं मन के चक्कर में बुरी तरह आया हुआ था। केवल इस एक ख्याल ने कि मेरा रूप लोगों के अन्दर प्रकट होकर उनकी सहायता करता है और मैं नहीं होता। मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और न मुझे पता तक ही होता है। मुझे मन के रूप को सोचने व समझने के लिए विवश किया व मन से बचा कर मेरे जीवन का तख्ता बदल दिया और अब मैं ऊंचा चढ़ गया तो मन समाप्त हो गया। मैं अब जैसे क़ैदी क़ैद में घसीटा जा रहा हो ऐसे बोल रहा हूं। तबीयत नहीं करती। क्योंकि मन से ऊपर चला गया हूं। जब मन ही न रहा तो बोलेगा कौन; क्या कहेगा और किसी को क्या बोलेगा। कबीर साहिब की वाणी है :—

मन को मारूं पटक कर टूक-टूक हो जाय।
विष की क्यारी बोय कर लुन्ता क्यों पछताय।
यह मन फटक पछोर दे, सब आपा मिट जाय।
पंगुला होय पिव पिव करे, ताको काल न खाय।

मन, माया का रूप समझ में आने से कि मानव के अपने मन के अन्तर जो कुछ फुरता है यह उसकी अपनी ही आत्मा है अर्थात् उसके जिस प्रकार के कर्म हैं, उसको जिस प्रकार के ख्यालात व विचार मिले हुए हैं उस प्रकार की बातें उसके अन्तर होती हैं, इस का विश्वास होने से मेरी आंखें खुलीं और मैं मन के चक्कर से निकल सका। अभी मन में रहता तो हूं मगर मन अब मुझे मारता नहीं। यह जो तुम्हारा मन है यही गुरु है, यही शिष्य है। यही सब कुछ करता है। किसी के अन्तर राम प्रकट हुआ, कृष्ण प्रकट हो गया या कोई गुरु प्रकट हो गया, कोई देवी आ गई। हम समझते हैं कि वह बाहर से आये। वह बाहर से कोई नहीं आता और हम सांसारिक लोग इस प्रकार के चमत्कार देख कर इसी एक भ्रम में आकर, मूर्ख बन कर संसार में लुट गये। तथा इस मन रूपी चक्कर में आकर भिन्न-भिन्न धर्मों व पन्थों में बंटे हुए

हैं व दुःख-सुख उठाते हैं। क्योंकि लोग सूक्ष्म प्रकृति की समझ नहीं रखते, इसलिए वे उसे चमत्कार कह देते हैं।

परसों मैं कर्नाटक का Radio सुन रहा था। एक सन्त पुरेन्द्र नामी हुआ है उसकी बाबत कहानी थी। वह दुकानदार था। उसकी पत्नी बड़ी भक्तिन थी। कोई ब्राह्मण आया कि मेरी लड़की की शादी है, मैं बहुत दुःखी हूं, मुझे कुछ दे दो। उस स्त्री के पास और तो कुछ नहीं था अतः उसने अपनी नथ (नाक का गहना) उस ब्राह्मण को दे दी। और वह ब्राह्मण उसी स्त्री के पति (जो दुकानदार था उस) की दुकान पर गया कि यह नथ ले ले तथा लड़की की शादी के लिए कपड़े दे दे। अब जब उसने उस नथ को देखा तो उसने उस गहने को पहचान लिया। उसने कहा—तू बैठ। वह स्त्री के पास गया तथा उसने उससे नथ के बारे पूछा! स्त्री घबराई। उस ने कहा—मैं ला देती हूं। वह अपने कमरे में गई, उसने सोचा? नथ तो मेरे पास नहीं है तो पति के सामने मेरी बेइज्जती होगी! उसने विष घोला और पीने लगी।

उसकी नथ उस कटोरी में आ गई। उसने नथ लेकर उसको दे दी। अब वह बड़ा हैरान हुआ। उसने जाकर वहां देखा कि जहां वह सन्दूकची में नथ रख कर गया था वहां नथ नहीं थी। जब से उसको यह ज्ञान हो गया, साधु हो गया, महात्मा हो गया, गृहस्थ छोड़ दिया। जो कुछ पास था दान में दे दिया। फिर उसने प्रचार करना प्रारम्भ किया। अब मैं सोचता हूं कि क्या यह ठीक है? मानव के विचार में बड़ी भारी शक्ति है। हमारा मन ही रक्षक है और मन ही हमारा भक्षक है। जो कुछ है तुम्हारा अपना मन है। जो व्यक्ति इस मन को काबू कर लेता है वह इस संसार में सफल होता है। मगर मन को काबू करने का क्या इलाज है? यह एक प्रश्न है। मैंने जो इलाज किया मैं वह बता सकता हूं। शायद आप लोगों के लिए पूरा न हो। मैं सारा जीवन मन के साथ जूझा। कभी मैंने मन को मारा और कभी मन ने मुझ पर सवारी की। मुझे तो मन का रूप समझ में आने से मन काबू में आया। अर्थात् केवल एक विश्वास से कि मेरे मन

के अन्तर जितनी शक्लें व विचार बनते हैं यह बाहर से कोई नहीं आते यह मेरे अपने ही मन के संस्कार व ख्यालात हैं। अतः इस समझ से जब भी मेरे मन से कोई गन्दा, बुरा या अच्छा ख्याल निकलता है तो मैं उसे केवल सूक्ष्म प्रकृति समझ लेता हूं। इसी ख्याल से मेरा जीवन बना, मैंने यह समझा। आप लोग मन को कैसे काबू करें मैं यह नहीं जानता। मन को काबू करना कोई सरल नहीं है और शायद यह काबू होता भी नहीं और न ही मन कभी मरता है, केवल मन को ऐसी जगह (मत्थे के बीच के स्थान से ऊपर) ले जाओ जो कि ख्यालात से ऊपर है। जब तक मन इस जगह से ऊपर नहीं जायेगा यह अपना अच्छा या बुरा खेल अवश्य करता रहेगा। अतः यह साधन और अभ्यास किया जाता है। जो कुछ मैंने समझा कि मैं कैसे ऊपर गया, यही कबीर साहिब ने कहा हैं। वह कहते हैं कि कोई भी व्यक्ति किसी अवस्था में भी इस मन से पार नहीं जा सकता। लाख कोई सिर पटक कर मर जाय उसका मन बिलकुल काबूमें नहीं आयेगा जब तक उसको यह ज्ञान नहीं कि जो कुछ इसके मन के अन्दर फुरना फुरती है यह

कल्पित है और माया है। यह मेरा अनुभव है और चूंकि यही अनुभव कबीर साहिब ने भी निम्नलिखित शब्द में कह दिया, इसलिए मुझे हौसला हो गया। मेरे मन ने मुझको बहुत-२ तंग किया हुआ है। मैं जानता हू कि मेरे मन ने मेरे साथ क्या किया हुआ है मुझ को पता है :—

साधो ! यह मन हैं वड़ा जालिम ।
जा को मन से काम परो है, तिसही ह्वै है मालूम ।
मन कारन जो उनको छाया, तेहि छाया में अटके,
निरगुन सरगुन मन की वाजी, खरे सयाने भटके ।
मन ही चौदह लोक बनाया, पांच तत्त गुण कीन्हे,
तीन लोक जीवन वस कीन्हे, परै न काहू चीन्हे ।
जो कोउ कहै हम मन को मारा, जा के रूप न रेखा,
छिन छिन में कितनौं रंग ल्यावै, जे सपनेहु नहिं देखा ।
रसातल इकइस ब्रह्मंडा, सव पर अदल चलावै,
षट रस में भोगी मन राजा, सौ कैसे कै पावै ।
सव के ऊपर नाम निहच्छर, तहँ लै मन को राखै,
तव मन की गति जान परै यह,सत्त कबीर मुख भाखै ।

तुमको जीवन का क्रियात्मक अनुभव बताता हूं ताकि तुम अपने जन्म को बना लो । यह मन जालिम कैसे है ? देखो ! थोड़ा सा विचार आ जाता है,

कोई चिन्ता आ जाती है जिस से सारी-२ रात व्यक्ति को नींद नहीं आती क्योंकि विचार सताता रहता है। हाय ! यह क्या हुआ, हाय ! यह क्या हुआ। यह कठिनाई रहती है फिर काबू कैसे आयेगा ? मन के अन्दर से जो ख्यालात उठते हैं जब तक इन्सान उनको सत्य मानता रहेगा तो मन को काबू नहीं कर सकता। बहुत सच्ची और ऊंची बात है। मेरे साथ बीतती है। हालाँकि मैं सब कुछ जानता भी हूं फिर भी किसी समय शक्लें या ख्यालात मेरे सामने आते रहते हैं। जानता हूं कि यह माया के सिवाय के कुछ भी नहीं। स्वप्न समान केवल संस्कार अर्थात् Suggestions & Impressons हैं जो मन पर पड़े हुए हैं। वास्तविकता कुछ और है जो इससे परे है। मगर फिर भी वे आते हैं, रुकते नहीं। थोड़े से हालात पैदा हो जाते हैं, कोई बात आ जाती है, मन्दिर की हो या अपने घर की हो या किसी समय तुमको ऐसा दुःख आ जाता है, वो ख्यालात बार-बार आते है और बार-बार तुम्हारा मन तुमको सताता है। कि नहीं सताता ? झगड़े, विचार करता रहता है। मेरे पर भी आता है। यह क्रियात्मक पहलू (Practical life) का

ज़िक्र है फिर क्या करता हूं ? फिर कैसे काटता व गंवाता हूं ? इनसे छुटकारा कब मिलता है ? अपने मन को छोड़ कर ऊपर ध्यान बांधता हूं। सुरत को त्रिकुटी के स्थान से ऊपर ऊंचे ले जाता हूं तब मुझे छुटकारा व शान्ति मिलती है। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह ज ऊंगा। जो मैंने अपने जीवन में अनुभव किया, यह है वह सच्चाई।

मैंने लाख प्रयत्न किये कि मन मेरे काबू में रहे, आनन्द लिए, खुशियां लीं। लेकिन समय आया जब गिरा। सारा जीवन इसी समस्या से संघर्ष करता रहा। आखिर जब से मन के रूप का सच्चा ज्ञान मिला तब मेरे अन्दर जो कुरेद या चाह थी जिसके लिए मैं भागा दौड़ा करता था, जिसके लिए मैंने गुरु किया तथा तपस्या की, यह किया, वह किया, तब उसका निर्णय हुआ। तुम भी इस मन के चक्कर में आये हुए हो। प्रत्येक व्यक्ति आया हुआ है। अब मैं चाहता हूं कि तुम्हारी आंख खुले। कई को तो यह ज्ञान भी नहीं है कि मन से परे भी कोई वस्तु है या कि नहीं।

मानव के मन के अन्दर या हमारी बुद्धि में किसी वस्तु की खोज है। सब इस खोज में फिरते हैं; समझते हैं कि वह बाहर से मिलती है। हालांकि इन्सान की खोज तो तब समाप्त होगी जब मानव का मन समाप्त हो जायेगा। अगर बात समझ में आ जाये अर्थात् मन का रूप समझ में आ जाये तो अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं। बात तो केवल मन के ख्यालात को रोकना और मन की लहरों में न फंसना है। जब तक मन विद्यमान है किसी का बुद्धि, मन, चित्त, अहकार मौजूद है, इसके साथ यह खोज कभी भी समाप्त नहीं होगी। तो सन्तों ने इसका इलाज यह बताया कि दसवें द्वार से आगे जाओ अर्थात् मन को छोड़ जाओ। लेकिन जब तक मन इकट्ठा नहीं होगा तब तक मन से आगे कैसे जाओगे? अत: इसका उपाय सुमिरन, ध्यान व भजन से अपने अन्दर ही मन को इकठ्ठा करना है। यही सुमिरन, ध्यान व भजन का उद्देश्य है। अब प्रश्न यह है कि यह खोज क्यों होती है? मन, विषय-विकार कमाने व लुटने या सांसारिक इच्छाओं में फंसने के कारण गन्दा व

निर्बल हो जाता है। कभी यह चाहता है कभी वह चाहता है और जो वस्तु जितनी निर्बल है उतनी गति व खोज अधिक करती है। उसे यह समझ नहीं आती है कि जो कुछ है तेरे अपने मन के अन्दर है। प्रेम में देना होता है। प्रेमी अपने प्रियतम को सब कुछ देना चाहता है, मांगता नहीं। क्योंकि मांगने वाला भिखारी होता है। जो बाहर में कुर्बानी करता है वह अन्दर जाता है और उसको ही टिकाव मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी आत्मा की ही खोज करता है।

मन को मारूं पटक कर, टूक-टूक हो जाय।
बिष की क्यारी बोय कर, लुन्ता क्यों पछताय।

विष की क्यारी क्या है ? गन्दे ख्याल व विचार और बुरी आशाएं रखना। तुम बुरी आशाएं रखोगे तो बुरे हो जाओगे और यदि अच्छी आशाएं रखोगे तो अच्छे हो जाओगे।

यह मन फटक पछोर ले, सब आपा मिट जाये।
पंगुला होय पिव-पिव करे, ताको काल न खाय।

यह परमार्थ है। पीऊ-पीऊ करना क्या है? अपने घर जाने की प्रबल चाह रखना अर्थात् मन से ऊपर जाना। मैंने यह चाह रखी थी और अब मैं पहुंच गया। गो, वहां ठहरा नहीं जाता मगर पहुंच गया। मुझे अनुभव हो गया। मिला क्या? क्या मैं कुछ बन गया? केवल मस्तिष्क में जो फित्तूर था कि परमात्मा क्या है? यह क्या है? वह क्या है? यह सब समाप्त हो गया। और जब वहाँ पहुंच जाता हूं तो बोलने को मन नहीं चाहता कहूं क्या? अब बड़ी कठिनता से नीचे आकर बोल रहा हूं।

मन पांचों के वश पड़ा, मन के वश नहिं पांच।
जित देखूं तित दौं लगी, जित भागूं तित आँच।

मन के अन्दर गन्दे ख्यालात आते हैं उसी में हम फंसे हुए हैं। जिधर जाओ मन ही मन है, तंग करता है।

कबीर वैरी सबल है, एक जीव रिपु पांच,
अपने-अपने स्वाद को, बहुत नचावै नाच।

यह परमार्थ है। जो व्यक्ति इस संसार से निकलना चाहते हैं, सन्तों की शिक्षा उनके लिए है :—

कबीर मन तो एक है, भावैं तहां लगाय,
भावैं गुरु की भक्ति कर, भावैं विषय कमाय।

अब इन वाणियों ने हमको पागल किया हुआ है। कहते हैं गुरु की भक्ति करो। हम लोग सारा जीवन बस गुरु के चरण में बैठ कर उसके पांव धो-धो कर पीते-पीते मर गये। गुरु की भक्ति है क्या? गुरु के सत्संग में जाकर जो वह बात कहता है, उस बात को समझ कर उस पर अमल करना गुरु की भक्ति है। तुम लोगों को हम गुरुओं ने सच्ची बात नहीं बताई बल्कि तुम लोगों को अपने जाल में फंसाने का प्रयत्न किया है कि आते रहो तथा हर महीने वेतन का दसवां भाग देते रहो, इसीलिए हम लोगों ने गुरुआई की है। भक्ति है क्या? गुरु समझ, ज्ञान व विवेक का नाम है। सत्संग में जाकर गुरु की बात को सुनो, बात को सुन कर, समझ कर उसपर अमल करो तभी तुम गुरुभक्त हो

और तभी तुम्हारा बेड़ा पार होगा। रुपया देने से तुम गुरुभक्त नहीं बन सकते। यह तो केवल सांसारिक व्यवहार है। मैं यह स्पष्ट क्यों कहता हूं ताकि मेरी आत्मा पर गुरु बनने का कोई पाप न आये। मैं आप लोगों को किसी प्रकार के धोखे में रखना नहीं चाहता।

मन के मारे वन गये, बन तज वस्ती मांह।
कहें कबीर क्या कीजिये, यह मन ठहरे नांह।
तीन लोक चोरी भई, सब का धन हर लीन्ह।
बिना सीस का चोखा, पड़ा न काहू चीन्ह।

तीन लोक में चोरी होना क्या है? शरीर की शान्ति, मन की शान्ति और आत्मा की शान्ति का खोया जाना, यह तीन लोक में चोरी होना है। यह क्यों होती है? क्योंकि हमारे अन्दर भिन्न-भिन्न प्रकार के ख्याल पैदा होते हैं जो हमें शान्ति नहीं लेने देते। यह शान्ति कौन ले गया? ये हमारे मन के जो ख्यालात थे वे हमारे काबू में नहीं थे, इन्होंने हमको अशान्त कर दिया।

कबीर यह मन मसखरा, कहूं तो मानै रोस,
जा मारग साहिब मिलें, ताहि न चालै कोस।

ज़रा अपने मन को देखो तो कि तुम्हारे मन के साथ क्या होता है ? अपने मन को देखा करो।

मन मुरीद संसार है, गुरु मुरीद कोई साध,
जो माने गुरु बचन को, ताका मता अगाध।

मैंने जो गुरुभक्ति कही वही कबीर साहिब ने कह दो। केवल वर्णन करने का ढंग भिन्न है। कहते हैं कि जो गुरु के बचन को मानता है वह गुरु-भक्त है, केवल मत्था ही टेकने वाला गुरुभक्त नहीं है।

जैसी लहर समुद्र की, तेती मन की दौड़,
सहजे हीरा निपजे, जो मन आवे ठौर।

जितना झगड़ा है इस मन का है। इस मन को इकट्ठा करना है, मन पर काबू पाना है। क्योंकि मन हर समय तरह-तरह के विचार उठाता रहता है। इस लिए सन्तों ने इसको अच्छे ख्याल व सुमिरन, ध्यान बताया है ताकि तुम्हारा मन ऊटपटांग न सोचता

रहे। केवल मन को काबू करने के लिए सुमिरन और ध्यान है। इसका कोई और अर्थ नहीं।

दौड़त दौड़त दौड़िया, जहां लग मन की दौड़,
दौड़ थके मन थिर भया, वस्तु ठौर की ठौर।

मैं बहुत दौड़ा। दौड़-दौड़ कर थक गया। शान्ति मिल गई। अब सांप मर गया है मगर दुम हिलती है। अब चले-चलाओ का समय है। अब सत्संग कराने को भी दिल नहीं चाहता। क्या बोलूं, बहुत कहा। अपना कर्म भोगा। दाता की आज्ञा मानता हूं। आप आ जाते हैं तो अपना कर्त्तव्य पूरा कर देता हूं कि ऐ मानव! जो कुछ है तेरे अपने ही मन को काबू करने में है। गुरु का काम है सच्ची बात बता देना, ज्ञान देना, अत: सच्ची बात बता चला।

पहले यह मन काग था करता जीवन घात,
अब तो मन हंसा भया, मोती चुन-चुन खात,
कबीर मन पर्वत हटा, अब मैं पाया जान।
टाँकी लागि प्रेम की, निकसी कंचन खान।

इस मन को प्रेम दो, सच्चाई दो यह तुम्हारा मन तुम्हारे लिए लाभदायक हो जायेगा वरना यही मन हानिकारक हो जायेगा।

अगम पन्थ मन थिर करे, बुद्धी करे प्रवेश,
तन मन सब ही छोड़ कर तब पहुंचे वा देश।

यही कबीर साहिब कहते हैं कि जब उस देश में चले जाओगे मन नहीं रहेगा अब समाधि में था वहां से उठकर बोलने को मन नहीं था, क्या बोलूं, क्या कहूं मन को watch किया करो कि यह सारा दिन क्या सोचता रहता है। अगर प्रतिदिन की बुराइयों की परवाह नहीं करोगे तो वे बुराइयां बढ़ती जाती हैं। अत:अपनी त्रुटियों को प्रतिदिन एकान्त में बैठ कर सोचो और दूसरे दिन उनको विचारने का प्रयत्न करो। एक रूप मान लो, उसको पूर्ण मानो। प्रात:, सायं मन को एकाग्र करके रूप बनाया करो व नाममाला सुमिरन करो। इससे तुम्हारी वृत्ति बलवती हो जायेगी। जो तुम्हारे Subconscious mind में इच्छाएं होंगी वे पूरी होंगी अगर न हों तो मैं जिम्मेवार हूं। प्रबल इच्छा रखो, मिल जायेगा तथा वैसे बन जाओगे। ध्यान करने वाला जो कुछ चाहे वह ले सकता है। ध्यान में इतनी शक्ति है। ऐसा करके देखो, आजमा कर देखो। सफल हो जाओ तो दूसरे को ऐसा बताओ कि ऐसा किया करो। जो कुछ है तुम्हारे ध्यान और प्रेम में

हैं। वह गुरु व वह शक्ति तुम्हारे अन्तर रहती है जितना प्रेम करोगे उतना लाभ होगा। जितना भी खेल है सब तुम्हारे विश्वास का है।

कोई गुरु तुमको कुछ नहीं देता, न राम, न कोई। तुम्हारा अपना ही विश्वास तथा मन की एकाग्रता की शक्ति तुम्हारा काम करती है। दुनिया अन्धी है, स्वार्थ में मूर्ख बन कर लुट गई। कोई कहता है मेरी राम ने, कोई कहता है मेरी कृष्ण ने सहायता की। सब पाखण्ड का जाल है। तुम्हारी सहायता करने वाला तुम्हारा अपना मन है। गुरु ने तुमको ज्ञान तथा समझ देनी है। गुरु तुमको सच्ची बात बता देगा कि ऐसा करो। करना-कराना तुमने अपने आप है। गुरु जो कहता है उस पर अमल करो कि अगर तुम संसार में सफलता चाहते हो तो अपने मन को इकट्ठा करो और जो वासना रखते हो उसको रखो, तो तुम उन्नति करोगे। मेरे विचार में मैंने आपको समझाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अमल करना तुम्हारा काम है। Lecture देने में व शब्द गाने से कोई लाभ नहीं। अमल करना सीखो।

प्रात: सायं बैठ कर मन को मस्तक के बीच इकठ्ठा करो, रूप बनाया करो, मूर्ति बनाया करो। मैं नहीं कहता कि तुम राधास्वामीये हो जाओ। जिस धर्म के हो, जिस पन्थ के हो उसके अनुसार अपने आप को Adjust करो, तुम्हारा काम हो जायेगा। तुम्हारी दुनिया बन जायेगी। अगर सच पूछो तो यदि परमार्थ चाहते हो तब भी यहां मस्तक के बीच ध्यान करके (यही ओम् का स्थान है) परमार्थ की चाह करके करो, तब परमार्थ भी बन जायेगा। यह कुञ्जी है। मन तुम्हारा साथी है। अगर तुम आगे जाना चाहते हो फिर भी तुम्हें त्रिकुटी में जाना पड़ेगा। जैसा तुम्हारा ख्याल है वैसा मिल जायेगा। मैंने अपने आद घर को ढूंढ़ने व जाने का मार्ग ढूंढ़ा था अत: मैं ऊपर चला जाता हूं और वहाँ पहुंच गया। मैंने जो ख्याल किया मेरा वो ख्याल पूरा हो गया। अब फंसा हुआ हूं। अमेरिका जा रहा हूं। क्योंकि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। वह जो मैंने सोचा हुआ था कि अनुभव कह जाऊंगा वो अपना कर्म काटता हूँ। जैसा ख्याल

वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति; जैसी करनी वैसी भरनी।

तुम आये हो तुम गृहस्थी हो, गृहस्थियों को कई प्रकार के कष्ट आते हैं। एकान्त में बैठ कर त्रिकुटी में ध्यान करो अपने अन्तर में सच्चे दिल व सच्ची चाह से मांगो, मिल जायेगा। मेरी आजमाई हुई बात है। लोगों को आजमाने से मिलता है। यह कानपुर से अमरनाथ सच्चदेवा आया हुआ है। इसके अन्तर तीन वर्ष पहले मेरा रूप प्रकाश में स्वप्न में आया। क्यों आया ? यह कहता था कि मैं देवी-देवताओं की भक्ति करता था और सदैव ध्यान में चाहता था कि मुझे कोई अच्छा रास्ता बताने वाला मिल जाय। क्योंकि इसकी प्रबल चाह थी तथा ध्यान करता है अतः इसकी चाह ने जहां से इसको यह वस्तु मिलनी थी प्रकृति ने इसको मेरे रूप में बता दिया। यह कुञ्जी है जो मैं बताना चाहता हूं। तुम्हारे मन के अन्दर सब तुम्हारे कर्म हैं। तुम अपनी गति को आप बनाओ। गुरु ने तुमको केवल मार्ग बताना है। भटका किस लिए खाते फिरते हो। देवी के आगे, मेरे आगे मस्तक नवाते

हो। क्या मत्था टेकने से वस्तु मिल जायेगी ? यह हमारा मत्था टेकना हमारे समाज की सभ्यता है; यह दूसरी बात है। मगर यदि इस बिचार से तुम किसी को मत्था टेकते हो कि तुमको वह चीज़ दे देगा, तुम्हारी ग़लती है। जो चीज़ तुमको मिलनी है, तुम्हारे अपने अन्तर से मिलनी है। असली पूजा की चीज़ अपने अन्दर है इसलिए इस मन को अच्छे ख्याल दो, प्रेम के, भक्ति के तथा नेकी के विचार दो, सारा दिन काम करो तथा सत्संग में जाने से अपने जीवन तथा अपनी दुनिया को बदल दो। जीवन कैसे बदलेगा ? जो नसीहत करता हूं उस पर अमल करने से तुम्हारा जीवन बदलेगा, बस।

गुरु मिले तो क्या कमाल हो। यदि सत्संग से बात ठीक प्रकार समझ में आ जाये तो अधिक परिश्रम की आवश्यकता नहीं। मन को ही बदलना है। तुम उसके हो रहो वह तुम्हारा हो जायेगा। पत्नी, बच्चों से मिलो, केवल मन को राजा जनक की तरह वहां रखो। यह सब बन्धन हैं। इसके रूप को

समझ कर दिल वहां रहे तथा घर में बैठ कर योग कमाओ।

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 12-7-81

सतसंग तीरथ राज पराग ।।
गंग भक्ति वहे निर्मल धारा, सरस्वती ज्ञान विराग,
जमुना करम धरम व्यौहारा, प्रेम प्रीत अनुराग ।
वट विश्वास इष्ट पद दृढ़ता, गुरु पद पूरन राग,
तीन त्रिबेनी कर अस्नाना, जगा सोया भाग ।
सुगम सहज सुख मंगल दाता, सुलभ जो सेवे लाग,
नहाये धोये निर्मल हो मन चित, छूटे कलि मल दाग ।
बगला विरति हंस गति पावे, कोमल बानी काग,
जीते-जो तत छिन फल देवे, इच्छा होय सो मांग ।
काम अर्थ धर्म मोक्ष जो चाहे, ऐसे तीरथ भाग,
राधास्वामी दया से पूरन कामा, गुरु संगत नित जाग ।

राधास्वामी ! यह सत्संग की महिमा गाई हुई है मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या यह ठीक है ? मैं नाक-कटों में शामिल नहीं हुआ न ही हां में हां मिलाता हूं। सत्संग किसे कहते हैं ? जहां सत्तपुरुष का कीर्तन होता है अर्थात् सत्त का संग । जो सत्संग कराने वाला है, जिसकी तुम संगत करोगे उस के प्रभाव तुम पर आयेगे। विज्ञान ने साबित किया है कि मानव का शरीर रेडियो स्टेशन है। इसके अन्तर से जो कुछ होता है यह निकलता रहता है और दूसरों पर प्रभाव डालता रहता है । दूसरों की Society का प्रभाव हम पर होता रहता है । इस का प्रमाण आपको पुलिस के कुत्तों से मिलता है। डाकू या चोर की कोई चीज़ कुत्ते को सुँघा देते हैं तो जिस मार्ग से डाकू या चोर गया होता है, वहाँ-वहाँ वह कुत्ता सूँघता हुआ अपराधी को पकड़ लेता है। इस लिए प्रमाणित हुआ कि कोई आदमी हो, जानवर हो बृक्ष हो या फूल हो कोई भी हो प्रत्येक के भीतर से जैसा वह है उसके जज़्बात निकलते रहते हैं और तुम जिस प्रकार के व्यक्तियों

से प्रेम करोगे उनको Rediation तुम पर अवश्य आयेगी। मैंने प्रत्येक वस्तु को क्रियात्मक पहलू से देखना चाहा है। अब मैं अनुभव करता हूं कि मैंने बहुत बुरे कर्म किये हुए थे जो मुझे सत्संग कराने का काम करना पड़ता है इसका मुझे बुरा फल मिलता है। यदि मुझे 20 वर्ष पहले पता होता तो मैं कभी भी गुरुआई न करता क्योंकि आप लोग जो भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार वाले व्यक्ति मेरे पास आ कर मुझे मस्तक नवाते हो तो छूत की बीमारी वाले की तरह आप लोगों की Rediation का प्रभाव मेरे पर पड़ता है। इसी कारण मैं देखता हूं कि बड़े-बड़े महात्मा शिष्यों के चक्कर में आकर गिर गये। इससे बचने का उपाय मैंने यह समझा कि मैं आप लोगों से अपने स्वार्थ के लिए या अपनी इज्जत या मान के लिए किसी से प्यार न करूं बल्कि निष्काम रहूं। आप लोगों को भी चाहिए कि अपनी संगति अच्छी रखो तथा अपने सांसारिक जीवन में अपने जैसे विचार वालों से मिलो ताकि आप को अशान्ति न आये। अत: दाता ने मुझे आज्ञा दी

थी कि कभी धार्मिक वाद-विवाद मत करो और न ही अपने धर्म की बात किसी दूसरे को बताओ। कोई यदि पूछता भी है तो उतना ही बताओ जितना तुम को अनुभव है। यह शारीरिक और मानसिक दुनिया का सत्संग है। दूसरा आत्मिक दुनिया का सत्संग है। स्वामी जी की वाणी है :—

सत्संग किसको कहत हैं सो भी तुम सुन लो,
सत्तनाम सत्तपुरुष का, जहां कीर्तन होय।

यहां सत्तपुरुष का और सत्तनाम का कीर्तन अर्थात् गाना (एक तो बाहरी गाना है, एक गाना अन्तर का है) है। तो सत्तपुरुष की संगत में क्या मिलता है? वह समझ या ख्याल मिलता है जिससे कि तुम उस मंजिल तक पहुंच जाओ। सुखमणि साहिब को पढ़ो :—

सत्तपुरुष जिन विवेकिया सत्तगुरु तिसका नाम।
ताके संग शिष्य उभरे नानक हरि गुन गान।

अर्थात् जिस व्यक्ति ने सत्तपुरुष को जान लिया

है उसका नाम सत्तगुरु है। अब प्रश्न यह है कि सत्तपुरुष है क्या वस्तु ? मेरी सारी आयु इसी खोज में गुजर गई। इसी अष्टपदी में लिखा हुआ है :—

जिह्वा एक, अस्तुत अनेक, सत्तपुरुष है पूर्ण विवेक।

विवेक ज्ञान व अनुभव को कहते हैं। पूर्ण विवेक का नाम सत्तपुरुष है जिस व्यक्ति को पूर्ण ज्ञान है उसकी संगत में बैठो, उसकी खिदमत करो, उसकी बातें सुनो तब तुमको वास्तविकता और शान्ति मिलेगी। हम लोग केवल यही समझते हैं कि खड़तालें बजा लीं व गाना गा लिया। किसी सीमा तक वह भी कुछ लाभ पहुंचाता है मगर पूर्ण लाभ क्या होता है ? सत्संग से समझ व ज्ञान मिलता है। जीने का भेद मिलता है। जहां से ये वस्तुएं मिलती हैं वहां का नाम सत्संग है। जब तक सत्संग में बात को नहीं समझोगे तो काम कैसे बनेगा !

चौथा पद सत्त खण्ड कहावे, महासुन्न के पार लहावे।

अब यह जो सत्तपुरुष का विवेक है इसे कौन प्राप्त कर सकता है ? ज्ञान व समझ तुम्हें तब आयेगी जब तुम्हारी वृत्ति व तुम्हारे विचार की शक्तियां एकाग्र होंगी। जब तक किसी के मन की वृत्ति एकाग्र नहीं होती वह किसी बात को समझने के योग्य नहीं होता। इसलिए यह सुमिरन, ध्यान और भजन है ताकि तुम्हारा मन एकाग्र हो जाये, वृत्ति एकाग्र हो जाये। एक तो शारीरिक इन्द्रियों का एकाग्र होना है एक मन को इन्द्रियों का एकाग्र करना है, एक आत्मा की लहरों का एकाग्र होना है जब यह तीनों इकट्ठी हो जाती हैं उस समय जो व्यक्ति का Self हैं उसको ज्ञान होता है कि मैं कौन हूं ? वास्तविकता क्या है क्या नहीं। इसलिए सन्तों के मार्ग में ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह सुरत शब्द का योग है और यह अभ्यास में दिया जाता है। मगर हम लोग तो सारा जीवन अभ्यास में ही मर गये लेकिन अभ्यास का उद्देश्य हमें प्राप्त नहीं हुआ। तो चौथा पद कब आयेगा ? मेरा नहीं आता था। जब से मुझे मन या सूक्ष्म माया का ज्ञान हुआ और मैं मन को

छोड़ कर आगे चला गया तो उस समय मुझे पता लगा कि कोई चौथा पद भी होता है।

चौथा पद सत खण्ड कहावे, महासुन्न के पार रहावे।

यह वाणी जाल है। सब कुछ भूल जाने, इकट्ठे हो जाने को शून्य कहते हैं। महाशून्य क्या है? हमारे मन की जितनी वृत्तियां हैं, ख्यालात हैं उनका समाप्त हो जाना ही शून्य है। और इन सम्पूर्ण ख्यालात व जज़बात का भूल जाना ही महासुन्न यानि बड़ा शून्य है। मैं सारा जीवन महासुन्न को ढूंढ़ता-२ पागल हो गया। मेरा दिमाग़ ही खराब हो गया। वाणियों को इस प्रकार रोचक बनाया गया है कि हम गरीवों को इन गुरुओं; महात्माओं तथा धर्मों ने अपने पीछे इस प्रकार से लगाया है कि ये हमको सच्ची बात नहीं बताते। जब शरीर और मन का बोध-भान समाप्त हो जाता है तो जो अवस्था आ जाती है उसका नाम महासुन्न है। इसके लिए जब तक मानव के अन्दर सांसारिक चाह और आशाएं मौजूद हैं वह लाख प्रयत्न करे

और सिर पटक कर मर जाये उसका वाप भी सुन्न व महासुन्न में नहीं जा सकता। जिसके दिमाग़ पर सांसारिक चाह व जज़बात के संस्कार पड़े हुए हैं वह लाख प्रयत्न करे जितना जी चाहे अभ्यास में जोर लगाये उसको सुन्न कैसे आयेगा। यह तो महासुन्न इत्यादि की अवस्थाएं उन व्यक्तियों के लिए हैं जो व्यक्ति अपने घर जाना चाहते हैं। यह साधारण जनता की वस्तु नहीं है। हम धर्म वाले गुरुओं ने अपने डेरों के लिए सबको नाम-नाम, जो आया नाम। मैंने नाम लेने से पहले मानव बनने को कहा हैं। वरना पैंतीस-2, चालीस-2 वर्ष सत्संगियों को अभ्यास करते-2 हो गये लेकिन उनको क्या मिला ? कभी व्यास, कभी आगरा, दौड़ते फिरते हैं। वह समझते हैं कि किसी गुरु ने हमको दे देना है। किसी गुरु ने नहीं देना, यह सब पाखण्ड का जाल है, धोखा है तथा फ़रेब है। गुरु ने तुमको केवल सीधा मार्ग बताना है या गुरु संगति से तुमको Automatic Rediation मिलनी है। यह नहीं कि गुरु तुमको देगा। यह झूठ है। गुलाब का फूल या सूर्य है वह यह नहीं कहता कि मैं तुमको धूप या

सूर्य है वह यह नहीं कहता कि मैं तुमको धूप या सुगन्ध ही दूंगा और कुछ नहीं दूंगा। जो जैसा व्यक्ति है उसके अन्दर से उसी प्रकार की Rediation निकलती रहती है। जो व्यक्ति बाहर से आते हैं वह अपने ही भाव के अनुसार उससे ले जाते है। यदि सन्त यह कहें कि इसका भला करूं; इसका न करूं तो वह सन्त नहीं है। सन्त के अन्दर से या प्रत्येक व्यक्ति के भीतर से एक विशेष प्रकार की waves निकलती रहती हैं। जो भी अधिकारी उनके सामने आयेगा उसको उनका लाभ पहुंचेगा। ऐसे ही, व्यक्ति किसी को कुछ नहीं देता। अन्य व्यक्ति जैसा वह स्वयं होता है अपने अधिकार के अनुसार उससे वह ले लेता है। यही सारा भेद है तथा यही सत्संग है। दाता दयाल का शब्द है:—

सत्संग तीरथ राज प्रयाग,
गंग भक्ति है निर्मल धारा, सरस्वती ज्ञान विराग।

इसका क्या अर्थ है? सत्संग में जीने का भेद (How to live in this World) अर्थात् मानसिक ज्ञान मिलता है, प्रेम मिलता है तथा समझ मिलती

है और संसार से पार जाने का मार्ग भी मिलता है। तो सत्संग किस व्यक्ति का होना चाहिए ? जो कोई सत्तगुरु है। सत्तगुरु कौन है ? जिसने सत्तपुरुष को जाना है। सत्तपुरुष क्या है ? वह पूर्ण विवेक और पूर्ण ज्ञान है। मगर यह पूर्ण विवेक कब आयेगा और किसको आयेगा ? जो अपने शरीर में रहता हुआ शारीरिक अनुभव करता हुआ, मन में रहता हुआ, ख्यालात का अनुभव करता हुआ उसको छोड़ करके महासुन्न के आगे तीसरा और चौथा पद जो प्रकाश और शब्द हैं उसमें जो ठहरेगा उसे यह सम्पूर्ण ज्ञान होगा।

जो मानसिक ज्ञान मैंने प्राप्त किया मैं वह संसार को बताता हूं। ऐ मानव ! जब स्वप्न का विचार जो तुम्हारे वश में नहीं है (अगर तुम चाहो कि अपनी इच्छा के अनुसार स्वप्न देखो तो वह भी नहीं देख सकते) तुम पर प्रभाव डालता है तो तुम जो कुछ जागते हुए सोचोगे उसका प्रभाव तुम पर क्यों न होगा ? अर्थात् अवश्य होगा।

इस नुक्ते में न हिन्दू का न मुसलमान का तथा न ही ईसाई का प्रश्न है वल्कि सम्पूर्ण जाति का प्रश्न हैं। दूसरा Law of Rediation है। जिसके साथ तुम्हारी संगति होगी उसका प्रभाव तुम पर पड़ेगा। मानवीय जीवन एक दूसरे पर प्रभाव डालता है। Rediation जाती है। अतः अपनी संगति को ठीक करो।

आत्मिक सत्संग क्या है? सत्त का संग। जो व्यक्ति प्रकाश और शब्द में रहता है यदि तुम उसकी संगत करोगे तो उसकी Rediation तुम में जायेगी वशर्ते कि तुम अधिकारी हो, यह भी साथ है। मैंने यह ज्ञान कैसे प्राप्त किया? मेरे साथ एक बात बीती। बाबा जैमलसिंह का एक शिष्य भोला नाथ था वह मुझसे चार वर्ष बड़ा था। मैं अम्बाला गया। वहां उसकी लड़की का पति Chief Booking Clerk था। उसको सदैव रोना रहता था। मैंने नाम लिया हुआ है, मेरी त्रिकुटी नहीं खुलती, मेरा शून्य नहीं खुलता। उस लड़की ने उससे कहा कलपता फिरता है, पण्डित फ़कीर चन्द

के पास चला जा। वह मेरे पास आया। मैंने उससे पूछा—भई ! सुना, तुम्हारी पत्नी है ? 20 बर्ष हुए मर गई। तेरा आचरण ठीक रहा है ? उसने कहा—10 वर्ष तक तो मैं गिरता रहा लेकिन शेष 10 वर्ष मैंने अपने आप को काबू रखा। मैंने कहा—अच्छा, मैं सुवह अभ्यास में बैठ जाऊंगा तुम भी बैठ जाना। मैं प्रातः अभ्यास में चला गया वह भी चला गया, घण्टे के बाद उठे तो वह नाचने लगा। बाबा जी ! मेरा प्रकाश खुल गया, शब्द खुल गया। मैंने अपने आप को पूछा—क्यों फ़कीर चन्द ! क्या तुमने उसे कुछ मन्त्र मारा ? मैंने उसे शब्द, प्रकाश खोलने के लिए कोई फूंक नहीं मारी। मुझे तो पता ही नहीं था कि वह है भी कि नहीं, मैं तो अपने ही अभ्यास में था तो उसका प्रकाश और शब्द किसने खोला ? सत्संग ने। अतः जो व्यक्ति स्वयं शब्द अभ्यासी है उसकी संगति में रहकर आपको उससे लाभ पहुंचेगा। यह सत्संग की महिमा है। यही दाता ने कहा है कि सत्संग क्या होता है ?

सत्संग तीरथ राज प्रयाग।
गंगा भक्ति बहे निर्मल धारा, सरस्वती ज्ञान विराग।
जमुना करम धरम व्यौहारा, प्रेम प्रीत अनुराग।

मैं अपने सत्संग में जीने का भेद बताता हूं। सांसारिक बातें तथा मन की घड़त की शिक्षा भी देता हूं तथा परमार्थ का ज्ञान इत्यादि तीनों बातें बताता हूं। यह दूसरी बात है कि मेरे व्याख्यान तथा पुस्तकों के व्याख्यान में अन्तर है। मुझे भाषण देना नहीं आता। मैं तो जिस प्रकार से एक दूसरे से बातें करते हैं इस प्रकार से आपको समझाने का प्रयत्न करता हूं। तो इस मेरे समझाने का क्या सार निकला? तुम संसार में आये हो अपनी संगति को ठीक करो। तुम्हारे विचारों में शक्ति है। यह संसार आशारूपी है। सब से बड़ी ग़लती जो हम खातें हैं वह यह है कि हम सन्तान को सन्तान के विचार से पैदा नहीं करते। तुम देखो, नौजवान क्या कर रहे हैं? इग्लैंड में देखो और स्थान पर देखो प्रत्येक जगह खुदरो सन्तान है। ऐसी सन्तान पैदा करके यदि तुम यह

चाहो कि तुम्हारा देश या तुम्हारा घर ठीक है, यह नहीं होगा। दुनिया शान्ति चाहती है लेकिन शान्ति नहीं आ सकती क्योंकि खुदरो सन्तान हुई है वह काबू में कैसे रहेगी ? वह अवश्य ही Out of Control होंगे। यह है ज्ञान जो मैंने जीवन में सीखा है और इसे बता कर अपना कर्त्तव्य पूरा कर देता हूं। गो, मैं जानता हूं कि तूती की आवाज़ नक्कारखाने में कोई नहीं सुनता। दूसरे तुम देखो संसार की जितनी मादायें हैं वे समय से पहले कोई नर को अपने पास नहीं आने देतीं लेकिन मानवीय जीवन है जो न सुबह देखता है, न रात देखता है, न शाम देखता है। हम विषय-विकार का जीवन काटते हैं इससे हमारा Balance of mind यानि दिमाग़ खराब हो जाता है। इसलिए मैं कह चला कि भ ! मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य रखने का प्रयत्न करो। कम से कम जब तक Maturity को न पहुंचे तब तक तो अपने आप को ठीक रखो।

तीसरे अगर आवागमन या जन्म-मरण से बचने का ज्ञान चाहते हो तो मरते समय तुम्हारे मन में किसी स्थूल वस्तु से प्रेम न हो। केवल अपने मन के साथ किसी के साथ भी प्रेम न करो बल्कि प्रकाश और शब्द में चले जाओ।

घट विश्वास इष्ट पर दृढ़ता, गुरु पद पूरन राग।

किस पर विश्वास ? फ़कीर चन्द पर विश्वास ? नहीं। यदि फ़कीर चन्द पर विश्वास रखोगे तो नहीं तरोगे। आवागमन नहीं जायेगा। फ़कीर चन्द जो बात कहता है उसको समझ करके तुमने विश्वास किस पर रखना है ? मालिक पर अर्थात् अपनी ही ज़ात पर। दीवानो ! वह सत्तगुरु, वह मालिक तुम से भिन्न नहीं है, वह तुम में रहता है और तुम उस में रहते हो। जब तक फ़कीर चन्द पर या किसी बाहरी राम पर विश्वास रखोगे तो यह तो आज भी टूट जायेगा ओर कल भी टूट जायेगा। फ़कीर चन्द के पास से तुमको सच्चा ज्ञान मिलेगा। अपनी ज़ात पर आप विश्वास रखो। वह बाहर

नहीं बल्कि तुम्हारे अन्तर रहता हैं। यह स्पष्ट सच्चाई है। सत्संग का अर्थ हो यही है कि तुमको सच्ची बात बता दी जाये । विश्वास किस पर ? अपनी ही ज़ात पर, अपने ही आप पर । वह मालिक तुमसे भिन्न नहीं है । अपने ही अन्तर में विश्वास रखो ।

घट विश्वास इष्ट पर दृढ़ता, गुरु पद पूरन राग ।

घट विश्वास अर्थात् अपने अन्तर में इष्ट पर विश्वास रखो। इष्ट तुम्हारा क्या है ? इष्ट तुम्हारा वह है जहाँ से तुम आये हो। कहां से आये हो ? दुनिया कहां से पैदा होती है ? प्रकाश से, प्रकाश कहां से पैदा होता हैं ? प्रकाश से, शब्द से ।

अत: हमारा इष्ट क्या हुआ ? शब्द या उससे भी परे जिस में से शब्द निकलता है। दुनिया धक्के किस लिए खाती फिरती है ? कभी मेरे दरवार में आती है; कभी किसी जगह दौड़ती फिरती है कभी किसी जगह । धक्के खा-खा कर क्या करोगे ? असली

पूजा की वस्तु आपके अन्दर है। जहाँ गुरु पद लिखा हुआ है। दुनिया ने इस को गुरु के पैर समझा हुआ है। पद, पदवी, Position या हालत को कहते हैं। जैसे तहसीलदार की पदवी। तो गुरु की पदवी क्या है? गुरु है कौन? तुम्हारे अन्तर से जो कुछ निकलता है उस सब को छोड़ जाने के बाद जो वस्तु शेष रह जाती है वह गुरु पद है, और वो तुम्हारी अपनी ही ज़ात है। सब कुछ तुम्हारे अपने अन्तर है, बाहर कुछ नहीं।

थिर कर बैठो साजन प्यारे, सत्तगुरु तेरे काज संवारे।

सब कुछ तुम्हारे अपने अन्तर में है लेकिन तुम बाहर भटकते फिरते हो। मैं तुमको फ़कीर चन्द के पीछे नहीं लगाना चाहता। मैं तुमको जो बात कहता हूं उसके पीछे लगो। मैं संसार में आया ही इसलिए हूं ताकि सन्तमत को स्पष्ट कर जाऊं। बहुत लूट पड़ी हुई है! संसार में इतनी लूट पड़ी हुई है कि कोई सच्ची बात नहीं बताता बल्कि सब हमको घेर-घार कर अपने जाल में फंसाते हैं। सिक्ख कहते हैं सिक्ख हो जाओ, हिन्दू कहते हैं हिन्दू हो जाओ, मुसलमान

कहते हैं मुसलमान हो जाओ, ईसाई कहते हैं ईसाई हो जाओ।

तीन त्रिवेणी कर अस्नाना, जागे सोया भाग।

कर्म, भक्ति और ज्ञान इन तीनों की बावत मैंने बता दिया। कर्म की बाबत स्पष्ट कह दिया कि सन्तान को सन्तान के विचार से पैदा करो। अपने स्वार्थ के लिए किसी के साथ हेरा फेरी, धोखा, फरेव मत करो। मैं तो यही कर्म समझता हूं। भक्ति अर्थात् प्रेम किससे ? अपने इष्ट से। ज्ञान मैंने बता दिया कि मुक्ति चाहते हो तो संसार से प्रेम मत करो। यह त्रिवेणी है। जब यह ज्ञान हो जाता है तो फिर क्या हो जाता है ? मुझे नहीं पता कि दाता दयाल का भाव क्या है। जब त्रिवेणी नहाने के बाद मैं इन तीनों से ऊपर चला जाता हूं यानि यह सारे कर्म ठीक करने के बाद मुझको क्या हो जाता है ? एक अवस्था आ जाती है। उसको सर्वव्यापकता समझ लो। न मुझे यह विचार होता है कि परमात्मा है, न विचार होता है कि संसार है, न विचार होता हैं कि मैं हूं और न विचार होता है कोई और है बल्कि एक

अवस्था आ जाती है। यह मुझे इस जीवन में मिला। मेरा जीवन सच्चाई से चला, कहां पहुंचा हूं ? यह अवस्था आ जाती है। मेरा Self जो है वह अपने आप को भूल गया। ऐसा मालूम होता है कि वह सर्वव्यापक है। अब मैं क्या करूं वह ब्यान नहीं हो सकता, एक अवस्था पैदा हो जाती है। यह मेरे जीवन का अन्जाम है। इस त्रिवेणी के पार जाने के बाद जीवन को क्या हो जाता है ? जीवन ऐसी अवस्था में पहुंच जाता है जिसकी तुमको क़दर नही बल्कि मुझे क़दर है। क्यों ? क्योंकि मैंने जीवन में इस मन में बड़ी ठोकरें खाई हैं तथा जीवन में मैंने मन से बहुत दुःख उठाये हैं इसलिए मैं इस जीवन को नहीं चाहता, बल्कि शरीर और मन से निकल कर अपने उस रूप में रहना चाहता हूं जो दाता ने कहा है :—

फ़कीरा ! रूप तेरा अति प्यारा।
तू सत् चित् आनन्द की मूरत, तू तीनों से न्यारा।

यह सत्, चित्, आनन्द क्या है ? मेरे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बोध-भान, Feelings of

existance of body, feelings of existance of mind and feelings of existance of soul । मैं जो वास्तव में हूं उसका मुझे पता नहीं लगता था मगर अब जब विवश होकर मन को छोड़ जाता हूं, विचार बन्द हो जाते हैं तो आगे प्रकाश और शब्द है ।

तेरी गति मति बुद्धि न जाने, अटक रहे मझधारा ।

बुद्धि कैसे नहीं जानती ? जब मैं मन को छोड़ जाता हूं, शक्लें छोड़ जाता हूं, वहां तो मन है ही नहीं तो बुद्धि क्या जानेगी ! यह क्रियात्मक जीवन का विषय है ।

करम किया, सत्त की चढ़ा घाटी, चित्त में विवेक बिचारा ।
सत्तचित्त आनन्द विलासा, चहूं दिश हरष पसारा ।

मैंने क्या कर्म किया ? अपने अन्तर चलता रहा; अभ्यास करता रहा; यही मेरा कर्म था । सत्त की घाटी मैं कब चढ़ा ? जब मैं मन के रूप को समझ कर मन को छोड़ गया । इससे क्या है ? जीवन प्रसन्नता से गुजरता है ।

तीन त्याग चौथे को धारे सो सबका आधारा,
द्वन्द्व जगत त्रिपुटी की त्रिकुटी, छोड़ चला घरवारा।

घरवार कौन सा ? 18, रेलवेमण्डी नहीं बल्कि शरीर को भूल गया, मन को भूल गया, आत्मा को भूल गया। यह है छोड़ देना। अभ्यास करते है तो सब भूल जाते हैं न !

नहिं है दो चार है नहिं है सहस्र हजारा।
एक एक है एक है, जाने जानन हारा।

अब अनुभव हो गया न ! अनेक ख्यालात होते थे। मैं और था मेरे ख्यालात और थे। शक्लें, व नूर व प्रकाश देखता था। देखने वाला कोई और था, शक्लें व नूर और था वह जो देखने वाला था वह मैं था।

एक अनेक कहां है तुझ में, यह भी भूल विकारा।
राधास्वामी रूप लखे, अपना तू व्यापक संसारा।

मैं अब यहां पहुंचा। कब पहुंचा ? जब मन की समझ आने से मन से उपराम होकर मन को

छोड़ दिया तब अपने उस रूप में चला गया। आज शब्द था :—

तीन त्रिवेनी कर अस्नाना, जागे सोया भाग।

मैं सोचता हूं कि सोया भाग क्या जागा ? जो मेरा आद था मुझे उसका पता लग गया। मेरा और तुम्हारा आद क्या है ? एक अवस्था है जहाँ से गति पैदा होती है, शब्द और प्रकाश पैदा हो जाता है, संसार बन जाता है।

सुगम सहज सुख मंगल दाता, सुलभ जो सेवे लाग।
नहाये धोये निर्मल हो मन चित, छूटें कलि मल दाग।

क्या हो जाता है ? मन साफ हो जाता है, जीवन शान से गुजर जाता है।

बगला विरति हंस गति पावे, कोयल बानी साज।

बगुला क्या करता है ? भक्त बन कर बैठ जाता है। मच्छी आती है, उसे हड़प कर जाता है। हम क्या करते हैं ? अपने स्वार्थ के लिए इतनी

चारसौबीस करते हैं, हेराफेरी, धोखा, फरेब करते हैं, हंस गति यानि समझ-बूझ व विवेक आ जाता है।

जीते जी तत छिन, पद पावे इच्छा होय सो मांग।

वह कहते हैं कि जब इस अवस्था में होता है तो जो उसकी वासना होती है प्रकृति स्वयं उसे पूर्ण करती है। मैं हैरान होता हूं कि मेरी सब इच्छाएँ कैसे पूर्ण होती हैं ? मुझे समझ नहीं आतो। He is merciful अर्थात् तुम उसके हो जाओ वह तुम्हारा हो जायेगा।

काम अर्थ मोक्ष जो चाहे, ऐसे तीरथ भाग।

अब देखो काम अर्थात् इच्छाएं कैसे पूर्ण होती हैं ? मेरे पास बहुत से लोग आते है। मैं कहता हूं कि भई, ध्यान किया करो। वह ध्यान करते हैं। उनके काम हो जाते हैं। मैं किसी को कुछ नहीं देता। जिसको मिलता है वह उसके अपने ध्यान की शक्ति से उन्हें मिलता है। यह नहीं हैं कि मैं देता हूं या कोई गुरु देता है। यह पाखण्ड का जाल था।

राधास्वामी दया से पूरन कामा, गुरु संगत उठ जाग।

तो आज सत्संग का शब्द था सत्त का संग। बाहरी सत्संग से क्या मिलता है ? समझ मिलती है। शारीरिक जीवन, मानसिक जीवन और आत्मिक आनन्द का जीवन गुजारने का भेद मिलता है और तीनों को छोड़ कर अपने घर जाने का भेद मिलता है। मैं तो ऊंचा चला गया। अपने-अपने मतलब की बात ले जाओ। तुम गृहस्थी हो, तुम को मैं एक ही बात कह देता हूं कि आप घरों में शान्ति रखा करो तुम्हारे विचार में बड़ी शक्ति है। तुम भूले हुए हो। जिस घर में कलह है, जहां झगड़ा है, घर में तुम Cold war रखते हो, प्रतिदिन झगड़ा, प्रतिदिन लड़ाई द्वैष है तो तुम यह आशा कैसे कर सकते हो कि तुम्हारा जीवन सुख से गुजरेगा। राम-राम मत जपो, कोई हर्ज नहीं लेकिन अपने घर में प्रेम से रहो, विषय-विकार कम करो, अच्छी सन्तान पैदा करो, ईमानदारी की कमाई खाओ, अपनी संगति अच्छी रखो, जीवन में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के साथ मेल होना आवश्यक है। क्योंकि मिलने के विना गुजारा नहीं

इसके लिए मेरे अनुभव में आया है कि जिस-२ मतलब व स्वार्थ के लिए हम मिलते हैं उससे ज्यादा उनके साथ सम्बन्ध न रखा जाये फिर कोई प्रभाव नहीं होगा। गृहस्थियों के लिए यही बड़ी वस्तु है और तुम्हारा जीवन सुख से गुजर जायेगा। जो आगे जाना चाहते हैं उनके लिए मन का झगड़ा है। ध्यान बनाओ, मन को एकाग्र करो। आत्मा के लिए और हिदायत है। जिन्होंने पार जाना है उनके लिए और है।

आज सत्संग कराने को मन नहीं चाहता था और न ही मुझे ढंग आता है। मैं नहीं चाहता कि मेरी बात को मानो। यदि तुम्हारी बुद्धि समझती है कि मैं जो कहता हूं ठीक है तब उस पर अमल करो। यदि तुम्हारी बुद्धि नहीं मानती तो उस पर मत अमल करो। मन चाहता है आया करो नहीं चाहता तो मत आया करो। मुझे तो अब यह भी चाह नहीं रही। इसलिए उदासीन रहता हूं कोई Attachment नहीं रखता। मुझे तो अब यह भी इच्छा नहीं रही अत: चाहे कोई आये तो आये न आये तो न आये।

आरजू है तो यह है, कि कोई आरजू न हो,
मैं को मिटा दूं साथ में इस मैं के तू न हो।
फिरका न जिस्म पर हो, न सर पर शाही ताज,
मुझ को अपनी ज़ात की भी जुस्तजू न हो।

मैं तो अन्तिम मंजिल पर पहुंच गया। चले-चलाओ का समय है! सब को राधास्वामी।

नोट

दोस्तो! वचपन से उस मालिक को मिलने का विचार था। हिन्दू था। आर्यसमाज कहता है कि ईश्वर, जीव और प्रकृति यह तीन हैं, कोई ब्रह्म और माया दो को मानता है। अब सन्त आये उन्होंने कहा कि केवल एक सत्तपद को मानो। एक और फिरका आया जो कहता है कि जहाँ हमने जाना है वहां कुछ भी नहीं, न सत्त है, न नाम है, न अनाम है। अब मैं सोचता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति ने अपने विचार से उस परमात्मा को या उस ईश्वर को जो कुछ समझा अपने विचार से समझा। किसी ने अपनी बुद्धि द्वारा बताया कि ईश्वर जीव और प्रकृति तीन चीजें हैं। किसी ने कह दिया, नहीं। ब्रह्म और माया किसी ने कह दिया और किसी ने केवल सत्त को

ही माना है। एक और कबीर जैसे निकले वह कहते हैं कि जहां हमने जाना है वहाँ अनामी है अर्थात् कुछ भी नहीं। यह जितने खेल करने वाले थे उस ईश्वर या परमात्मा को जिसको हम मानते है उसको प्रकट करने वाला कौन है ? मानव की बुद्धि तथा मानव का मन। मानव सब से बड़ा है। मानव की बुद्धि ने ही तो माना कि ईश्वर है। किसी ने उसे तीन और किसीने उसे दो तथा किसी ने उसे एक माना तथा किसी ने उसे माना कि वह कुछ भी नहीं। गर्ज कि मानव ने ही अपने विचार से अपनी बुद्धि से परमात्मा को समझा। वास्तव में जो परमात्मा है वह क्या है, इसका किसी को पता नहीं। सच्चे बनो, अपनी नीयत साफ रखो, कोई धर्म नहीं है। अपने आप को उसके अर्पण करो यही गीता कहती है। शरणागत ! मैं मन से आगे चला गया अब मैं सत्संग कराने के योग्य नहीं रहा बल्कि बंधा हुआ कैद होकर बोल रहा हूं। मैं अब ऊंचा चला गया। मुझे कोई भी सांसारिक Attachment नहीं रहो बिलकुल गले पड़ा ढोल बजा रहा हूं। खबर नहीं कि यह शरीर कब तक है।

परम दयाल परम सन्त फ़क़ीर चन्द जी महाराज के पत्र की नकल जो उन्होंने 6-8-81 को पिट्सबर्ग U. S. A. से मानवता मन्दिर होशियारपुर को लिखा।

रात के दस बजे हैं। पिट्सबर्ग के बड़े अस्पताल में एक 2015 नं० कमरे में पड़ा हूं। अपनी 95 वर्ष की सारी आयु मेरे सामने घूमती है। साधन किया, अभ्यास किया, इनसे क्या समझा ? कि मैं वास्तव में एक चेतन का बुलबुला हूं। मैं चाहता था और चाहता हूं कि जब मेरा अन्तिम समय आये तो मैं कैसे शरीर व मन इत्यादि को छोड़ कर ऊपर जाऊंगा तो यह बता जाऊंगा। मगर अनुभव कुछ उलटा हो रहा है। मैं चाहता हूं कि शरीर और मन से अलग हो जाऊं मगर जब शारीरिक कष्ट होता है, सिर चकराता है तो यह असम्भव हो जाता है। क्योंकि चार दिन से दिन-रात निरन्तर ग्लूकोश दिया जा रहा है, अत: अब थक गया हूं और ऐसा करना असम्भव हो गया है। अब रात के 12 बजे हैं। पेशाब के बार-बार आने और सख्त जलन होने के कारण चार दिन से कुछ खाया नहीं जाता। जो ज्ञान-ध्यान था, वो कहां गया ? काश ! बड़े-बड़े महात्मा यह हाल बताते कि उनके

साथ क्या-क्या बीती ? सांसारिक जीव इस लाभ उठाते ।

खेद ! मुझे सिवाय इसके कि पांच दिन से चारपाई से बंधा हुआ हूं या पेशाब के समय जलन होती है, कोई विशेष कष्ट नहीं । मगर मालिक ! मुझे एक दुःख है । मैंने जहां तक हो सका जीवन में किसी सत्संगी का नहीं खाया । केवल मूल चन्द रिज्जूमल कटनी वाले, दुर्गादास व मेरा लड़का रुपया भेजते हैं जिससे मेरा निर्वाह होता है । अब यहां का खर्च परमात्मा ही जाने क्या होगा । 150 डालर तो मकान का प्रतिदिन का किराया है ।

डा० राव कहता है—चिन्ता मत करें वह सब सहन करेगा । और यदि मैं अमेरिका में मरा तो 2000 डालर और खर्च होगा । कर्म की Philosophy को देखकर आंखों में आंसू आ रहे हैं । तो क्या मुझे फिर दूसरे जन्म में जो यह रुपया खर्च करेंगे, देने पड़ेंगे ? मस्तिष्क सोचने योग्य नहीं ।

छम छम बरसत पानी नैनन से मेरे,
अन्जाने कर्म जब मेरे सामने आता है ।
बस एक ही बात से दिल को है सहारा,
कि मालिक के चरणों में समाना आता है ।

मौज, मौज, मौज । मैं सुखी हूं । दया करो जो फिर इस काल-कराल देश में न आऊं ।

परम सन्त फ़कीर चन्द
ज का पत्र जो उन्होंने
ो पिट्सबर्ग यू.एस.ए. से
मानवता मन्दिर के नाम लिखा ।

राधास्वामी !

ऐ मेरी आत्मा ! सत्य बता कि तूने अपनी नीयत से जो कुछ धर्म, कर्म, ईमानदारी, सेवा, भक्ति, ज्ञान इत्यादि किये हैं क्या वह इस समय तुम्हारी शारीरिक बीमारी को दूर करने में सहायक हो सकते हैं ? संसार वालो ! सुनो !! नहीं । हाँ, दाता दयाल की दया से यह ज्ञान हो गया है कि यह संसार काल व माया का है । प्रत्येक प्राणी साधु, महात्मा, सन्त कोई भी अवतार हो, सबको अपने कर्म का फल भोगना पड़ता है । कोई भी प्राणी जब तक शरीर, मन में है वह इन संस्कारों, कर्मों (जो उसने अपने प्रारब्ध कर्म या इस जन्म के कर्म किये हुए हैं) से बच नहीं सकता । अगर उसे यह ज्ञान है कि सब सूक्ष्म प्रकृति है या माया है तो प्रभाव

कम होगा। मगर मुझे जब शारीरिक कष्ट हे. है तो डाक्टर टाका लगाता है तो चाहें यह लाख ज्ञान हो कि यह माया है, कुछ भी लाभ। नहीं होता। क्योंकि मैने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा जिनके रूप में मैंने उस परम तत्त्व को माना, कहा था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा बदल जाना, इसलिए कहता हू किन्तु दावा नहीं करता कि इस संसार का पैदा करने वाला ज़ालिम है। वृक्षों के पत्तों को कीड़े खाते हैं। एक कीड़ा दूसरे काड़े का खाता है। वशर्ते कि प्रत्येक स्थान पर क्या है ? यह सोचो।

हम मानव, हकूमत में आकर, मुल्की हिरस में आकर हजारहां जानें लड़ाई में मखा देते हैं। इन्सान स्वयं काम वासना के लिए सन्तान पैदा कर लेता है। यह नहीं सोचता कि इस बच्चे को क्या-क्या दु:ख व कष्ट आयेंगे। यह ससार ऐसा ही है।

फिर कौन सी शिक्षा बदलूं। ऐ इन्सान ! इस संसार से निकल जाने का प्रबन्ध करो और अपनी नीयत को साफ रख कर अपने स्वार्थ के लिए किसी के साथ हेरा-फेरी, धोखा व फरेब मत करो।

सीयत नामा जो
दयाल जी महाराज
ड़ने से पहले कर गये।

मैं फ़कीर चन्द आयु 94 वर्ष, पुत्र श्री पण्डित मस्तराम पुत्र श्री दसौंदी राम वासी मकान नः 18 रेलवे मण्डी होशियारपुर का हूं। मैंने अपने गुरु महर्षि शिवव्रत लाल वर्मन जी जोकि मेरे सत्तगुरु थे उनकी आज्ञा के अनुसार कि शरीर छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना, उनकी आज्ञा थी इस-लिए मैंने सेठ दुर्गादास जो अब स्वर्गवास हो चुके हैं उनकी सहायता से आज से 18 वर्ष पहले मानवता मन्दिर होशियारपुर की नींव रखी थी और उसका ट्रस्ट स्थापित किया गया है जोकि रजिस्टर्ड है। यहाँ का सारा काम ट्रस्ट करेगा। मेरी मृत्यु के उपरान्त मेरे रक्त का कोई व्यक्ति ट्रस्टी नहीं बन सकता है। हां मगर सेवा कर सकता है, मन्दिर में नौकरी कर सकता है, मगर; मन्दिर के प्रबन्ध में

कोई दखल नहीं दे सकता है । मैंने अपने जीवन के अनुभव आध्यात्मिक, गृहस्थी और धार्मिक लाईनों पर चलने के बाद यह परिणाम निकाला है कि सब से पहले दुनिया को मानव बनने की आवश्यकता है। इसलिए मैंने गृहस्थ, सामाजिक और राजनैतिक लाईन वालों को मानव बनने की आवाज़ दी है। मन्दिर से मेरी अनुपस्थिति में मुन्शी राम भगत जो यहां के सैक्रेटरी हैं; उनको नाम दान देने, जीवों को हिदायत करने और दुःखी तथा अशान्त व्यक्तियों की सहायता करने के लिए नियुक्त किया है, और इनके बाद या इनके होते हुए मैं डा: I. C. Sharma जो परमार्थ और अभ्यास के बड़े शिक्षित व्यक्ति हैं वह दो वर्ष पश्चात् अमेरिका से पैन्शन लेकर यहां आ जायेंगे और वह मेरे स्थान पर काम करेंगे और जब वह यहां पर नहीं होंगे तब भगत मुन्शी राम जी मेरे स्थान पर सत्तगुरु की हैसीयत में काम करेंगे। शेष मन्दिर का सारा हिसाब-किताब ट्रस्ट के हाथ में रहेगा, यह ट्रस्ट की जिम्मेवारी होगी। मैंने शिशु स्कूल खोला हुआ है, यहां बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाती। पहली बार जब बच्चा

दाखिल होता है तो उनके माता-पिता से तहरीर लेनी पड़ेगी कि तीन बच्चों से अधिक बच्चे पैदा न करो, अगर तीन से अधिक बच्चे पहले हों तो अब पैदा न करें। शेष सारा काम ट्रस्ट के आधीन है। मेरा इससे कोई मतलब नहीं है । मेरी मृत्यु के बाद मेरी हड्डियां मानवता मन्दिर में पृथ्वी में गाड़ दी दी जायें और उनके ऊपर मानवता मन्दिर का झण्डा जो कि इस समय मानवता मन्दिर पर लहराता है, वह झण्डा मेरी हड्डियों पर खड़ा कर दें । मेरा ट्रस्ट किसी दूसरे ट्रस्ट या संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं रखता है। मैंने किसी संस्था से कुछ नहीं लिया बल्कि दिया है। मेरे सत्तगुरु की समाधि जिला बनारस में लोगों ने बनवा दी है। मेरे सन्त मत में समाधि,कब्र, मकबरा या मरे हुए पुरुषों की पूजा नहीं है इसलिए मेरा शिव समाध से भी कोई सम्बन्ध नहीं है। आदर के विचार से कुछ न कुछ वार्षिक देता रहा हूं। यदि मेरी इच्छा के अनुसार वहां कोई आचार्य काम करें, जब तक हो सकता है मैं सहायता करता रहूंगा, वरना नहीं। और न ही उनका कोई अधिकार मुझ पर है। मेरे नाम पर बहुत से देश-विदेश

में मानवता के नाम पर सैण्टर खुले हुए हैं। वहां के आचार्य अपना-अपना काम करते हैं उनका और मेरे ट्रस्ट का सिवाय प्रेम के और कोई सम्बन्ध नहीं है। इसलिए अब मैंने वकायमी होश-हवाश और दुरुस्ती बुद्धि से वराये हित्त मन्दिर मजकूर प्रथम और अन्तिम वसीयत लिख दी है कि प्रमाण रहे।

तिथि 20-4-80

कातब :—वलराज कुमार वसीका नवीस होशियारपुर।

नम्बर 385 अ 2/—

श्री फकीर चन्द

———

सूचना

सब मानव मन्दिर पढ़ने वाले सज्जनों से प्रार्थना है कि हजूर परम दाता परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज क्योंकि इस असार संसार को छोड़ गये। इसलिए आगे के लिए उनके निजी नाम पर कोई मनीआर्डर, चैक अथवा ड्राफ्ट न भेजें। केवल सैक्रेटरी फ़कीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट के नाम भेजे जायें।

सम्पादक

———

R. S.

Respected brothers Bhardvaj Ji, Bhagat Ji, Jaura Sahib and all the Satsangi brothers and sisters Radhaswami !

The Supreme will of Pita Ji, Param Sant Param Dayal, Anami Tatva, Called Pandit Faquir Chand Ji Maharaj decided to go back Home, Nij Dham by adopting Mahasamadhi, from where his Mauj is running the cosmos. He is no doubt Shedding his grace for the well-being of whole humanity.

The question why Pita Ji Chose the United States of America to ascend to the highest level Cannot be answered by any intellectual Speculation. My meagre understanding after Pondering over this unexpected divinely planned event has come to this conclusion by the grace of Pita Ji.

"The descent of the Supreme Truth into the body of Faquir Chand, the son of Pandit Mast Ram took Place in India, the holy land of saints and sages. His Spiritual development took its upward turn under the guidance of His Supreme Holiness Data Dayal Shiv Brat Lal Ji Maharaj, who had Visited U. S. A. in 1911. Exactly after seventy years Param Dayalu Pita Ji on his fifth visit to the United States chose ascend to Param Dham in Mercy Hospital, Pittsburg, pa. U. S.A. Its worth noting that Pita Ji, before going to Maha Samadhi had Stayed in the supreme state for $3^1/_2$ hours and returned to consciousness, several days before he was operated. The details of this qreatest experience during the life of Pita Ji and the miraculous effects of this experience would be given separately. However, the clear message of the descent of Pita Ji at this hour and this juncture of world situation is this. By taking birth in India and by leaving his uttam Dehi in America has built a bridge in East and West. His

radiation has to work for peace and well-being of the whole world. He was, is and ever shall be the Jagat Guru radiating and aspiring all the Sincere disciples through whose medium his Mauj will accomplish the mission for which his infinite self had become finite for 95 years and has again become infinite and Permanent.

Shri Rajeshwar Rao Ji the great devotee of Pita Ji. Dr. Ram Dev Rao, the Spiritual son of Param Dayal Ji Maharaj and Dr. Hans Raj Ghei, the Personal guardian angel of Pita Ji deserve our heart felt thanks and blessings for their unique services to Pita Ji.

Another reason why pita ji chose to leave his mortal coil in the United states seems to be the way in which his body has been preserved for the Darshan of hundred of thousands of devotees. Inspite of the fact that our emotions would be uncontrolled, the Darshan of the dignified and the glorious, calm and peaceful body of Pita Ji in the most beautiful and blessed casket would no doubt give confidence and courage to the crying Satsangis. No Saint in my knowledge has left his body in such a dignified way at international level.

I humbly apeal to all concerned to get inspiration from the seniors like Respected Pire Mughan Sahib, Shri Anand Rao Ji and Shri Nand Lal Ji and continue to apply the principles taught by Pita Ji to our practical life every day. His grace will always be with us undoubtedly. My obescience to Jagat Guru Param Dayal, Param Tattav Shri Faquir Dayal Ji Maharaj Radha Swami to all.

Yours in Him

Manav Dayal (Sharma)

होशियारपुर।

दयाल शर्मा !

राधास्वामी,

आपका पहला अध्याय प्राप्त हुआ किन्तु भाव और भाषा बहुत अच्छे हैं हमारे मन्दिर के ये Administrtor है, वह Msc. PH.D. हैं, केमिस्ट्री के प्रोफैसर होकर रिटायर हुए हैं।

यह बताओ कि यह किताव वहां खुदा छपवायेंगे या हम छपवाएं। डा. कुन्दन लाल एडमिनिस्टेटर का विचार है कि अगर अमेरिका में छपे तो ज़्यादा अच्छी रहेगी और ज़्यादा लोगों को लाभ होगा व खूब बिकेगी। हम अपने यहां जो अंग्रेज़ी में छपवाएंगे वो इण्डिया में काफी होगी। जो वहां छपे उसकी सेल पर आपका हक होगा। हम यहां छपाएंगे वो लोगों को मुफ्त देंगे। मेरी राय में आप वहां छपाकर कापी राइट अपने नाम रख लो उसकी जो कीमत आये वह भी आप की होगी।

आपकी हिन्दी के जो मजबून आएंगे वे मानव मन्दिर में हर माह छपाएंगे व उनके स्पेअर्स छपाकर किताव की शक्ल दे देंगे। हम अंग्रेज़ी के चेप्टर जो आते रहेंगे साथ साथ एक हज़ार छपाते रहेंगे पूरे नौ चेप्टर आ जाएंगे छपाकर मन्दिर की तरफ से Foreword लिखकर छपा देंगे।

मेरी तरफ से भाग व बच्चों को राधास्वामी। मैं चाहता हूं कि बैसाखी तक मेरी सेहत ठीक रहे, बैसाखी पर ज़रूर आना, आपको व मुन्शी राम जी को मानवता का चोला पहना दूंगा। काम करो, मेरा अनुभव है कि

दस पन्द्रह साल के बाद सन्तों की असलीयत व हकीकत की शिक्षा मिलेगी व मानवता का काफी प्रचार ही नहीं बल्कि लोग असली सूरत में इसको अपनाएंगे मगर Destruction पहले होगी तब लोगों को होश आयेगी, मौज ने तुमको मेरे साथ लगाया क्यों ? नहीं जानता। इसमें कोई बेहतरी होगी।

जन्मों के कर्मों का फल मिलेगा, वो ये समझकर कि ये हमारे कर्मों का फल है या उसकी इच्छा है-इस विचार से हम दुःख सहते हुये भी शांति प्राप्त कर सकते हैं।

मैं बूढ़ा हूं 95 साल की उमर हो रही, चाहता ज़रूर हूं कि मैं अमेरिका आऊं मगर यह मौज के अधीन है।

आप मुझे पूर्ण सूचना दे देना ताकि आपका व आपके साथियों का इन्तज़ाम हो जाये।

मैं 15 जनवरी को बाहर जा रहा हूं, फरवरी के आखिर में होशियारपुर लौटूंगा।

भाग व बच्चों को प्यार, आपके लड़की का टेवा मैं बनवा रहा हूं, मैं कह नहीं सकता। बाकी बातें मिलने पर।

—आपका

फकीर

Faqir Library Charitable Trust (Regd.)
Manavta Mandir, Hoshiarpur.

15-7-81

Dear Dayal Sharma,

Radha Swami. Your letter dated 7th July, 1981 is before me. One Mr. R.J. Sahni, 157 Glenwood Drive Scotts Valley C. A. 95066, U.S.A. wants me in California. Keep him in programme.

There is one Dr. Manmohan Verma 704 Chichester Lane Mohit Villa Silver Spring M. D. 20904, Washington, U. S. A. This man's father asked me to inform him in U. S. A. to meet me.

Dayal Sharma ! I do not know where and why his will is dragin me. My life has been spent in search of something. Connot say how long this life will remain. Tell Bhag that I am bringing two packets of Chandar Prabha Vati. I have received two chapters in Hindi from Bhag. Only last one remains.

Waiting for tickets.

Yours in HIM,
Faquir

Hoshiarpur.
30-6-81

Revered and Most Respected Manav Dayal Jl Maharaj.

Saprem Radha Swami youı most affectionate letter of the 19th ınstant was duly received by me on the 27th. I have been anxiously waiting for the same for a couple of days baek. As directed I showed this letter to Sh. Girdhari Lal ji on the 28th in the abseuce of His Holiness who had gone to Chandigarh for sat sang purposes. He informed me that all your letters have been duly received and replied thercto, but on yonr previous address which would have been redirected and recevied by you by now. Please Confirm.

I also read a copy of the message of His Holiness (Pita ji) which was distrıbued and read by your goodself in Florida. Sh. Girdhari Lal also informed me about the mıraculous healings through your revered-self by his kind grace.

His Holiness will be leaving Hoshiarpur for His forcign tour on the 23rd proxım (July 81). He will be accampained by Dr Hans Raj Ghai who is a very nice gentleman. He requested His Holiness to take him with him this time.

Convey my R S. to all concerned special regaıds for Smt. Bhag ji. All my family members offier their regards for you and your mrs.

Any Service

With pround regards. Yours in Him.

Faqir Library Charitable Trust (Regd.)
Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur.
Dated 12-6-81.

Dayal Sharma,

Radha Swami. Paras Ram's son is in Switzerland. His wife has already gone there to attend her son's marriage with a local girl on 6th June. After marriage the couple will come to India with Paras Ram's wife. Therefore, I am bringing Dr. H. R. Ghai with me. He is a capable Homoepathic Doctor with high Education and has retired from a high position in the Defence Department. I have cabled Rao to send invitation for both i. e. myself and Ghai.

Dayal Sharma, we all are destined for particular duties. It is upto Him to take any work from any individual. My grand daughter will complete her education in April 1982. She is very intelligent and has also appeared in an examination which if she passes, she can have admission in U S.A. for further training in Electronic Engineering. Question of selection of her husband will be considered after April, 1982. She does not want a permanent stay abroad. She only wishes to go to U.S.A. for further studies for a period of Two years only. One boy living in Canada at present, has been rejected on the basis that he cannot migrate to India for ever. So I will try on receipt of the Photo of your son, but want to leave it entirely on her. Marriages are made in heaven.

Love to Bhag. I am waiting for two-three chapters more in Hindi.

Yours IN HIM
Faqir.

Heartest love to you, your wife & Children.
Long Live oh Dayal Sharma.

Hoshiarpur.
Dated 6-3-81

Dearest Manav Dayal Sharma,

After one and a half month tour I returned to Hoshiarpur. Dr. Jaura showed me your letter. I also read one chapter of your translation. Listen, I believe Thou hath come with a certain mission on this carth I have my head to thy Holiness and I have a chance to meet your Holiness. I await you anxiously. My mission on this earth is at the verge & I want to leave this world for good as early as possible. I heartily wish you success in your mission. This work of saint, Data Dayal, mine, yours will be the guide for the human nation to follow after destruction, which is inerilable. Thought has a power, the present system of elections in democracy, the relgions desnires, hatred, prejudies of greed, all evils, which are coming me of the human mind are having their effect, therefore, troubles, miseries cannot he avarded iur teachings will keep humanity to movld them their in the fulure life.

Your is Him
Faqir.

R. S. Necesary arrangement would he made for your conferladle stoy at the Baisabhi Sat Sang.

Hoshiarpur.
Dated 5-11-80

Dayal Sharma,

Radha Swami, I have gone through your letter of 28th Oct. I am sending you a book in urdn which consists of ideas of Data Dayal Maharaj ji. His ideas were taken from. different books written by Him. The articles in this book will entighten you in rspeet of all spheres of life and this will prove V. useful to you in your life to earry on this duty.

I am getting this book translated in to Hindi. Carry on, the nature will guide you wilhin you. Keep yourself free from prejudice and selfish motives I am certain nature will belp you all round.

Love to Bhag.

Your in Him
Faquir

He knows why I am dragged to do this work. His will is supremc Keep faith. We all are tools in the hands of nature. Love Respect to Bhag & clildren.

Hoshiarpur.
Dated 2-12-80

Dayal Sharma,

Radhaswami.

I forgot to write you thate the Hindi of your articales must be very very simple. The words used by you cannot be understood by me.

Medium of preaching should be in very simple language so that all may be benefited by it.

Your first chapter of Hindi is published in Manav Mandir of Dec. 1980. You will receive it in due time.

Your in Him.
Faquir

Please pay my love & respect to Bhag & Rs to all who know me.

होशियारपुर।
6-6-81

प्यारे दयाल शर्मा !

राधास्वामी।

कर्म भोग वश घसीटा जा रहा हूं। मुझे आशा है कि 23 जुलाई को होशियारपुर से चलूंगा। राओ तथा कैनेडा वाले मिल कर मेरे बुलाने का प्रबन्ध कर रहे हैं। मैं चाहता हूं कि वह जो प्रोफैसर यहां आया था उसका Address मुझे भेज दो। आप के 6 विषय (Chapters) हिन्दी के आ चुके हैं वे छप रहे हैं बाकी भी भेज दो ताकि मानव मन्दिर में छप जायें और फिर एक किताब (अलग) बन जायेगी। हम आपके Chapters की 1000 कापी अलग अपने पास रख रहे हैं जब सारे छप जायेंगे तो उसको एक किताब बन जायेगी। मैं शायद पहले कैनेडा जाऊं और फिर पिट्सबर्ग में आऊं। वहां से अगर वर्जीनिया या कैलेफोर्निया वाले बुलायेंगें तो चला जाऊंगा। बुढ़ापा है। कर्म। और क्या लिखूं। जब से तुम गये कोई पत्र नहीं आया। भाग को प्यार। क्या आप दिसम्बर में आ रहे हैं ?

—आपका

फ़कीर

Please Send me the article which you said you will deliver in Some Conferenc

होशियारपुर
30-1-81

पुत्रो भाग !

राधास्वामी ! पत्र आपका मिला । आपके आने की कोई आवश्यकता नहीं । मैं आप के लड़के की कुण्डली बनवा रहा हूं । एक लड़का और भी है । दोनों में से जिसकी कुण्डली अच्छी मिलेगी वहां अपने लड़के को लिखुंगा कि और उसे अपनी लड़की रानो की शादी करने की राय दूंगा लड़के की फोटो दयाल शर्मा के हाथ भेज देना ।

लड़की की उमर 21 साल Electric Engineering Warangal में पढ़ रही है । बाकी सारा हाल दयाल शर्मा से करूंगा । आखरी फैसला न मुझ पर, न लड़के पर बल्कि लड़की पर होगा । ब्राह्मण के नाते मैं ज्योतिष को मानता हूं मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि तेरी सेहत बनी रहे ।

आपका

Dayal Sharma R. S.

While came to India Pl. bring Battery cells used in my ear aids. the old one sent by that lady Mareia have been exhausted. Bring only one dozen because after a year they loose their energy.

Yours in Him
Faqir

होशियारपुर
29-12-80

प्यारे दयाल शर्मा !

राधास्वामी ।

आपके चार सफे लेख के व पत्र मिला । मैं तो बुद्धू हूं । इल्म नहीं जानता । दाता ने ख्याल दिया था शिक्षा को बदल जाना जाना जो चाहो मर्जी करो । जिस उसूल पर मैंने तालीम को बदला वो उसूल बता देता हूं । और इसी उसूल को अमेरिकयों को बताओ ।

आदमी रात को सो जाता है । सपने में उसे गुस्सा आता है किसी को मारता है तो उसका हाथ हिल जाता है । सपने में वह भयानक दृश्य देखता है उसकी जबान बड़बड़ाती है । सपने में खयाली औरत बनाता है उसका वीर्य निकल जाता । है सपने का ख्याल अपने वश में नहीं जब सपना या ख्याल जिस्म पर असर करता है । तो जाग्रत में जो कुछ इन्सान सोचता है नफरत द्वेष बुगस कीना बुराई या अच्छाई उसका असर उस पर और दीगर पर क्यों न होगा । वेदों में इसीलिये शिवसंकल्प मस्त कहां गया है । ये बात किसी के जेहन में आ जाय तो वो अपना व दूसरों का जीवन बेहतर बना सकता है ।

दयाल शर्मा !

इस असूल को समझ कर जो वैज्ञानिक भी है और सनातन धर्म का है—मुल्क में या घरेलू जीवन में इस जमाने में जैसे विचार नफरत बुगुस वगैरह के मुल्कों में हो रहे हैं इसका असर कभी खाली नहीं जायगा—नतीजा शूचाल-महामारी या जंग अथवा किसी प्रकार की तवाही लाजमी है—लाख खुदा की दरगाह पर इबादतें हों—इससे कोई बच नहीं सकता।

ईश्वर है क्या ? प्रकृति के खेल का नाम ईश्वर है। और उसके खेल या कर्म को ही ईश्वर की मर्जी कहा जाता है—

दयाल शर्मा !

मैं कई दफा सोचता हूं मेरे इस काम से क्या फायदा ? क्योंकि जो कुछ मानव जाती ने व्यक्तिगत रूप से या सामाजिक तौर से या राजनैतिक ढंग से सोचा है उसके असर से तो कोई बचेगा नहीं-हां आयन्दा के लिए हम अपने कर्मों को बेहतर बना सकते हैं—और जो हमको पिछले

———

होशियारपुर ।
23-12-80

दयाल शर्मा,

राधास्वामी !

बूढ़ा हो गया हूं, तुम्हारा इन्तज़ार करता हूं ताकि जो अनुभव मैंने जिन्दगी में हासिल किया उस अनुभव को आप संसार में फैला सकें। मैं तो तुम्हें बुलाने नहीं गया मौज ने तुम्हें मेरे साथ लगा दिया। अब मेरे चले-चलाओ का समय है। बैसाखी पर जरूर आना। भाग की बीमारी की चिन्ता है। दयाल शर्मा 'कर्म भोग' है।

आपके जन्म पत्री के मुताबिक 1982 में आपका अमेरिका में रहना नुक्सानदेह होगा। आप 1982 के शुरू में Permanently आ जाओ। बहुत कमा लिया है। नहीं तो मैं 8/9 हज़ार रुपया आपकी रोटी के लिए खर्च के लिए छोड़ जाऊंगा। मैं चाहता हूं कि आपकी जिन्दगी Practical हो ताकि उसका प्रभाव दूसरों पर पड़े। मैं बैसाखी का इन्तजार कर रहा हूं।

आपका
—फ़कीर

होशियारपुर।
20-12-80

प्यारे दयाल शर्मा व प्यारी भाग !

राधास्वामी।

25 डालर का चैक और तीसरा चेप्टर मिल गया। दूसरा जनबरी में छप रहा है मानव मन्दिर में। पहले चेप्टर को बहुत पसन्द किया है।

आप मुझे सेहत का ख्याल रखने को लिखते है। मैं कहता हूं आप अपनी सेहत का ख्याल रखो। मेरी सेहत भी ठीक नहीं रहती। मैं चाहता हूं आई. सी. शर्मा आगामी बैसाखी पर ज़रूर आवे।

नोट :—अब आपने तीनों चेप्टर भेजे हैं आपके पहले दो चेप्टर आ चुके थे।

आपका
—फ़कीर

प्यारे दयाल शर्मा ! राधास्वामी।

खत मिला आप जो लिखकर भेज रहे हैं अगर वो अंग्रेजी में हो तो मानव मन्दिर मासिक में छपाने में लाभ कोई नहीं क्योंकि चार हज़ार रिसाला हिन्दी में ही छपता है वे अंग्रेजी नहीं जानते। अगर हिन्दी में लिख सको तो बहुत अच्छा हो।

शादी के बारे में मैं देख रहा हूं मगर असली चीज़ लड़की व उसके मां बाप हैं। मैं आपके लड़के का टेवा बनवाऊंगा। खुश रहो। आप अमेरिका में रहते हैं मन्दिर का ख्याल रखा करो, यहां अगर कोई बिल्डिंग वगैरह न बनाई जाय तो भी माहवारी खर्चा करीबन १५ हज़ार का है। पंखा, स्कूल, तीन हस्पताल बिजली वगैरह का खर्च है।

मैं चाहता हूं आप वैसाखी पर जरूर आना ताकि मैं आपको संगत के साथ परिचय करा सकूं। मैंने जिस तरह दूसरे गुरु नाम देकर चेले बनाते हैं वैसा काम नहीं किया। जो मैं मुंह से कहता हूं मैं समझता हूं वही मेरा नामदान है।

एक मि० डेविड है केलिफोर्निया में उसने मेरी आटोबायग्राफी मंगाई है वो मेरी जिन्दगी व शिक्षा पर एक किताब लिख रहा है। वो आटोबायग्राफी मन्दिर में भी छपेगी एक माह के करीब में छप जायेगी आपको भेजूंगा। अपने अन्तर में सच्चा विश्वास रखो।

Whare There is a will there is a way.

दयाल शर्मा !

मेरी जिन्दगी ने पलटा खाया। मैंने काम किया दाता का हुकुम था कि चोला छोडने से पहले तालीम बदल जाना। बदल चला मगर दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने समझा व अनुभव किया वो सोलह आने सच है।

—आपका फ़कीर

होशियारपुर
दिनाक १६-८-८०

प्यारे दयाल शर्मा !

राधास्वामी ।

आपका कोई पत्र नहीं आया । मेरी भी सेहत ऐसी वैसी ही रहती है । मेरे शरीर छुटने पर आपको यहां आना पड़ेगा । वैसाखी पर तो जरूर आना—मेरी पोती के रिश्ते के मुतल्लिक दो लड़कों से टेवे मिले हैं एक लड़का उनमें से आपका भी है । अभी तो लड़की Electronic Engeeneering पढ़ रही है । अगर लड़का व बाप भी रज़ामंद हो और लड़का ११ साल के अन्दर हिन्दुस्तान आवे तो मैं चाहता हूं मेरा लड़का व बहू उसे देख लें । टेवा मिला हुआ है मगर बहुत अच्छा नहीं, संयोग की बात है । लड़का मांसाहारी व शराबी न हो । जब आप बेसाखी पर आयेंगे तब बातचीत करूंगा ।

मैंने कहा व लिख था कि ओम् प्रकाश शर्मा जी वाशिंगटन एम्बेली में अकाऊंट आफिसर हैं उनका लड़का अमेरिका में इलेक्ट्रिक इंजि० पढ़ता है । मौका मिले तो उसे देखकर अपनी राय देना उस लड़के का टेवा अभी नहीं आया है ।

दयाल शर्मा ! इतनी साफगोई कोई नहीं करता में संसार में हेराफेरी नहीं जानता । मेरा काम मौज करती है । लड़के से पूछ देखना मेरा इरादा पोती को यहां पास होने के बाद U.S.A. में किसी यूनिवर्सिटी में और तालीम देने का है । अगर संयोग हो तो देखो क्या बनता है ।

—आपका

Radha Sawami
Satsang BEAS
Dated 21-9-81.

The Secretary,
Manav Mandir,
Sutehri Road,
Hoshiarpur.

Dear Sir,

I got your telegram about the passing away of Shri Faqir Chand Ji Maharaj yesterday on my return from tour and learnt with much regret and sorrow about his sad demise. Please accept my heart-felt condolence in your bereavement.

Yours sincerely,
Charan Singh

Gyan Devi Salwan College,
New Delhi—17 Sept 1981.

The Staff and Students of Gyan Devi Salwan College deeply mourn the death of Sant Faqir Chand Ji Maharaj who had been kind enough to bless this college on its inaugural.

We express our heartfelt condolences and hope that God will give strength to his family and followers to put up with this grievous loss.

Principal.

Manavta Mandir,
Hoshiarpur.
Dated 10—1980

R. S. In reply to your letter I will be sending the book entitled, "Autobiography of Faqir", in English. Its print will be ready with in a fort-night. This book, will give you the necessary information. I was born on Nov. 18,1886 I had a dream of Data Dayal Ji after my continuous weeping for 24 hours in 1905, the date and month I do not remember. I went to Mesotpotemaia in 1916 in the First world war and returned in 1929. The Last letter of Data Dayal Ji addressed to me is given in the book cited above. I am also enclosing herewtih shabdawali, Faqir Bhajnawali and Sar Bachan Part II given to me by Data Dayal Ji. in 1919), which contain different Shabads addressed to me occasionally by Data Dayal Ji. The "Sar Bachan being the only copy we are left with in the Library may please be brought back by you, when you come to India on Baisakhi. It will reveal to you, how His Holiness brought to me in the panth.

I am also enclosing herewith 4 copies of "Yogic Philosophy Regarding the remaining 50 copies of

this Volume, you can take them with you when you return to States after Baisakhi and a Parcel containing 100 books sent to you by Sea was returned. I am afraid the same thing may not be repeated with this parcel. However, if P. O. accepts this parcel by sea it will be done.

As regards checking of proof of Manav Mandir I do agree with daughter Bhag, but can't help, because corrections of proof done by her while in States is not practicable. She can do it when you will be at the helm of affairs here.

On receipt of Hindi manuscripts we will start getting it printed in Manav Mandir with a forward by me. I want you to be in Delhi without fail.

Royalty of the books published by you in States would be yours.

Yours in HIM,
Faquir

—o—o—